International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.065
Vol.8 No.2 Nov – Dec 2020

किशोरावस्था में मानसिक विकास एवं समस्याएँ

डॉ. कुमार अमित

Ph.D (Education), दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास.

सारांश :

महोदय बडवर्थ के अनुसार "मानसिक विकास 15 से 20 की आयु में अपनी उच्चतम सीमा पर पहुँच जाता है। यह विकास हारमोन के अनुसार 15 आयु में, जोन्स एवं कोनाई के अनुसार 16 वर्ष में और स्वीयरमैन के अनुसार 14 से 16 आयु के बीच में होता है। बुद्धि का अधिकतम विकास किशोरावस्था में ही ज्यादा देखने को मिलता है। मानसिक स्वतन्त्रता किशोर में मानसिक विकास का एक मुख्य लक्षण है। वह रूढ़ियों, रीति-रिवाजों, अन्धविश्वासों और पुरानी परम्पराओं को अस्वीकार करके स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने का प्रयास करता है।

मानसिक योग्यताएं किशोर की मानसिक योग्यताओं का स्वरूप निश्चित हो जाता है। उसमे सोचने समझने, विचार करने, अन्तर करने और समस्या का समाधान करने की योग्यताएँ उत्पन्न हो जाती है। एलिस क्रो के अनुसार - "किशोर में उच्च मानसिक योग्यताओं का प्रयोग करने की क्षमता हो जाती है, पर वह प्रौढो के समान उनका प्रयोग नहीं कर पाता है। किभोर में चिन्तन करने की शक्ति होती है। इसकी सहायता से वह विभिन्न समस्याओं का हल खोजता है, पर उसके हल साधारणत: गलत होते है।

इसका कारण बताते हुए, एलिस क्रो ने लिखा है- "किशोर का चिन्तन बहुधा, शक्तिशाली पक्षपाते और पूर्व - निर्णयों से प्रभावित रहता है। किशोर मे तर्क करने की प्रयाप्त विकास हो जाता है। तर्क किये बिना वह किसी बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होता है।

परिचय :

कल्पना-शक्ति किशोर वास्तविक जगत मे रहते हुए भी कल्पना के संसार मैं विचरण करता है। कल्पना के बाहुल्य के कारण उसमे दिवा- स्वरण देखने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। कुछ किभोर अपनी कल्पना शक्ति को कला, संगीत, साहित्य और रचनात्मक कार्यो के द्वारा व्यक्त करते है। बालको के अपेक्षा बालिकाओं में कल्पना शक्ति अधिक होती है।

रुचियों की विविधता किशोरावस्था मे रुचियों का विकास बहुत तीव्र गति से होता है। बालको और बालिकाओं मे कुछ रुचियों समान और कुछ भिन्न होती है। किशोरावस्था मानव जीवन की सबसे महत्व एवं नाजुक अवस्था है, जिसे आंधी - तूफान तथा तनाव की अवस्था भी कहा गया है। इस अवस्था मे किशोर - किशोरियों में एक विशेष प्रकार के शारीरिक, मानसिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक और समाजिक विकास होता है। इससे उनकी रुचियों, इच्छाओं, अवश्यकताओं आदि में भी परिवर्तन आ जाते है। इसके साथ किशोरावस्था में किशोर - किशोरियाँ पारिवारिक एवं सामाजिक बंधनों से मुक्त होकर व्यक्तिगत विचारों तथा इच्छाओं से अधिक प्रेरित होती है। परिणामतः पर्यावरण के विभिन्न पक्षों का निश्चित प्रभाव उनके मूल्यौ, आदतों एवं समस्याओं पर पड़ता है।

किशोरावस्था मानव-जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था है। जिसमें बच्चों में विशेष प्रकार के शारीरिक, मानसिक, समाजिक, संवेगात्मक तथा संज्ञात्मक विकास होता है।

विवरण:

किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था है जहाँ एक ओर बाल्यावस्था समाप्ति के कगार पर होता है। वहीं दूसरी ओर युवावस्था आरंभ की अंगड़ाई लेती है। दूसरे शब्दों में बाल्यावस्था की समाप्ति तथा युवावस्था के आरम्भ के मध्य अवस्था का किशोरावस्था कहते है।

मनोवैज्ञानिकों का ऐसा विश्वास था कि 15-16 वर्ष की उम्र तक बालकों का मानसिक विकास पूरा हो जाता है। परन्तु बेले 1956 व्दारा किये गए अध्ययनों से स्पष्ट हो गया है कि मानसिक विकास जैसा कि मानसिक परीक्षणों व्दारा मापने से पता चलता है कि 19 वर्षो की अवस्था तक होते रहते है।

लिनसे महोदय (1965) के द्वारा किये गये अध्ययनों से पता चलता है की 22 वर्ष की उम्र तक

मानसिक परीक्षणों के प्राप्तांकों में अधिक होने का संकेत मिलता है। इसका अर्थ यह हुआ कि 22 वर्ष की उम्र तक बालकों का मानसिक विकास होता है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि किशोरावस्था में किशोर तथा किशोरियों मैं जो शारीरिक, मानसिक, एवं संज्ञानात्मक विकास, संवेगात्मक विकास तथा समाजिक विकास आदि होते है। उनके पैटर्न मे काफी विभिन्नता होती है। स्किनर 1990, के अनुसार विकास के विभिन्न अवस्थाओं विशेषकर किशोरावस्था में होने वाले परिवर्तनो का ज्ञान शिक्षकों की वह मूल पूँजी होती है, जिसके आधार पर वे शिक्षा का सिर्फ मार्गदर्शन ही नही करे पाते, बल्कि उनके समायोजना सम्बन्धी समस्याओं का निदान भी करने में सफल हो पाते है। किशोरावस्था मे किशोर तथा किशोरियों को कई समस्याओं का सामना करना होता है ऐसे तो किशोरों में शारीरिक विचलन एवं शारीरिक दोष जैसे दाँत, दृष्टि एवं श्रवण की समस्या तो आम होती है, परन्तु इससे हटकर भी कुछ समस्याए है जो शारीरिक तथा मानसिक विकास के कारण उत्पन्न होता है। किशोर व्यक्तित्व के विभिन्न क्षेत्रों में आये परिवर्तनों के कारण उनमे समायोजन सम्बन्धी समस्या उत्पन्न हो जाती है। किशोरों को विभिन्न क्षेत्रों में सफलता दिखलाने की तीव्र इच्छा होती है। वे अब बहुत कुछ स्वयं करने में सक्षम होते है और इन्हें इस सिलसिले मैं किसी की जरूरत नही होती है। फलत: उन्हे इन क्षेत्रों में समायोजन से सम्बन्धित कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो निम्नलिखित प्रमुख
है –

1. स्कूल मे समायोजन सम्बन्धी समस्याएँ
2. पारिवारिक सम्बन्धौ एवं सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित समस्याएँ
3. यौन व्यवहार समायोजन समस्याएँ
4. नैतिकता-सम्बन्धित समायोजन समस्याएँ
5. व्यवसायिक समायोजन से सम्बन्धित समस्याएँ
6. मादक वस्तुओं के सेवन की समस्याएँ
7. किभोरापराध

इन समस्याओं के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि किशोरों मे समायोजन से सम्बुन्धित

अनेक क्षेत्रों मे अनेक तरह की समस्याएं उत्पन्न होती है। जिन पर ध्यान देकर किशोरों का मार्गदर्शन किया जा सकता है।

निष्कर्ष :

किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था है यहाँ व्यक्ति अपने भविष्य के बारे में कुछ परियोजना बनाने में सक्षम हो जाता है वह भविष्य में कौन सा व्यवसाथ चुनेगा इस पर अक्सर सोचता रहता है। परन्तु जब वह देखता है कि अनेक लोग अच्छी शिक्षा पाने के बावजूद किसी अच्छे व्यवसाय को चुनने में असमर्थ रहते है तो उनमें घोर कुठा और होती है और वह विद्रोही हो जाता है समाज एवं परिवार के लिए समस्या बन जाता है।

अक्सर देखा जाता है कि किशोर एवं किशोरियों किसी भी समाजिक कार्यक्रम मे स्वतंत्रा होकर भाग लेना चाहते है जिसकी अनुमति माता-पिता से प्राय: नही मिलती है। इसका परिणाम यह होता है कि उनमें तथा माता -पिता मे तनाव बढ़ता है और परिवारिक संघर्ष तीव्र हो जाती है। सिम्पसन महोदन 1989 के अनुसार जो व्यक्ति किशोरावस्था में अपना घर छोड़कर चल जाते है, उसके पीछे कई कारणों में पारिवारिक संघर्ष को एक प्रधान कारण माना जाता है। इतना ही नही पारिवारिक संघर्ष रहने से किशोरों को अपने विकासात्मक कार्यो को पूरा करने मे अभिभावक एवं शिक्षक से उचित दिशा-निर्देश नही मिल पता है जिनसे उनकी समस्याएँ और भी जटिल हो जाती है।

संदर्भ-ग्रन्थ-सूचि:

1. Research in Education – Hall inc
2. Innovation & Research in Education, Routledge and Kegan Paul, 183 pp.
3. The Element of Research of Education - Asian Publication House 539 pp.